delhi_Page 1 and 2 14/04/2015 09:37 Page 3

पावनता की गंगा बहायें

-ब्र.कु. सूर्य, माउण्ट आबू

''हम सारे विश्व में पावनता की गंगा बहायेंगे'' – ये गौरवपूर्ण शब्द थे उस एक सुशिक्षित पवित्र कन्या के, जिसने संसार में माया के सूर्य को अस्त करने का मनोबल धारण किया था। ये शब्द सुनकर मन गद्‌गद् हो उठा कि किसने इन, कलियुग के तमोप्रधान वातावरण में पली कन्याओं को इतना आत्म-विश्वास प्रदान किया! किसने इनके मन में पावनता के बीज अंकुरित किये! और किसने इन्हें माया को चुनौती देने का साहस दिया ... हमें अच्छी तरह ज्ञात है कि पवित्रता के सागर की दृष्टि जिन पर पड़ चुकी, जिन्होंने अपने मन का मीत सर्व शक्तिवान को बना लिया, जिन्होंने द्वार पर आये भाग्य को पहचान कर उसे स्वीकार किया, उन्हें ही ये बल प्राप्त हुआ।

फिर उस योगिनी ने कहा – ''जबकि संसार में चारो ओर विकारों की बाढ़-सी आ गई है, जिसमें सभी नर-नारी, साधु-सन्यासी बह चले हैं... जबकि अनेक दु:शासन अबलाओं के चीर हरण कर रहे हैं.... जबकि कंस प्रवृत्ति चहूँ ओर अपना आधिपत्य जमा रही है... दानवता अपना नग्न नृत्य कर रही है, हम पवित्र कन्याएँ विश्व में पवित्रता की सरिता बहाकर इस बाढ़ को शान्त करेंगी।''

उसने अपनी मन धारा को प्रवाहित करते हुए बोला – ''जबकि विश्व में चारो ओर हिंसा ने अहिंसा को ललकारा है... अहिंसा परमोधर्म का नारा लगाने वाले धर्मों ने हिंसा परमधर्म का हथियार सम्भाला है... जबकि अनेक निर्दोष लोगों के रक्त से धरती का आँचल सना हुआ है... और प्रत्येक मानव अपने को असुरक्षित अनुभव कर रहा है, ऐसे दुष्काल में हम स्नेह की सरिता बहाकर सबको मानवता सिखलायेंगी।'' कितने प्रेरणादायक और महान इरादे हैं उनके, और ऐसे ही वत्सों के साथ भगवान का बल होता है। और यह भी सम्पूर्ण सत्य है कि वे सतत् पवित्रता की चेतन प्रतिमूर्ति बनकर समस्त आसुरी सम्पदा को अपने चरणों में झुकने को बाध्य कर देंगी। कलियुग के इस डरावने अंधकार में जहाँ मनुष्य को कहीं भी प्रकाश की किरण दिखाई नहीं देती, चारो ओर अनेक दीपक जले हैं, जिनका प्रकाश शीघ्र ही इस भयावह अंधकार को दूर करेगा। ये दीपक हैं, वे ब्रह्मा वत्स, जिन्होंने मन में पवित्रता की ज्योति जगाई है और वे वत्स इस दीपक में ज्ञान-योग का घृत डालकर शीघ्र ही इसकी लौ को इतना ऊंचा कर देंगे कि समस्त विश्व उसे देख सके और उससे प्रकाशित हो सके।

कैसे इन छोटी-छोटी कन्याओं ने, गृहस्थ जाल में फंसी माताओं ने और अनेक युवा पुरुषों ने इस कठिन तप को अपना लिया। लोगों को विश्वास नहीं होता। इसी तप के लिए जंगलों में खाक छानते जटाधारी साधू इसे कल्पना कहकर स्वयं को भटकन में ही पड़े रहने देना चाहते है। कोई तो इसे असम्भव कहकर आगे बढ़ने का साहस ही नहीं करते। कोई पवित्रता को प्रकृति के प्रतिकूल मानकर इसे अस्वाभाविक प्रवृत्ति या प्रकृति से युद्ध या प्रकृति के नियमों के विरूद्ध कहकर इसकी महानता को ही स्वीकार नहीं करते। उन्हें पता ही नहीं कि अपवित्रता और पवित्रता का सम्बन्ध प्रकृति से नहीं आत्मा से है। काम की कामना या पवित्रता की भावना आत्मा को होती है न कि प्रकृति को, और पवित्रता ही आत्मा का मूल एवं सत्य स्वभाव है। फिर कौन है इन ब्रह्मा वत्सों के पीछे और क्यों इन्होंने संसार की विषय वैतरणी नदी में बहना स्वीकार नहीं किया ... इससे श्रेष्ठ क्या मिला इन्हें जो इन्होंने इस तामस और अन्ते दु:खदाई सुख का परित्याग कर दिया। इन्हें मिला सर्वश्रेष्ठ ईश्वरीय सुख और अतीन्द्रिय सुख... इन्हें मिला प्रभु-मिलन का अनुपम रस... इन्हें मिला स्व पर राज्य करने का सम्पूर्ण अधिकार... और भविष्य में इन्हें मिलता है अटल देव पद...

पवित्रता समय का वरदान है

अन्धकार सदा ही तो नहीं रहता और भला ज्ञान सूर्य की सृष्टि पर अंधकार का साम्राज्य हो भी कैसे सकता है... उसका अन्त होगा, और शीघ्र ही होगा। ये वही तो समय है जबकि अंधकार की सघनता समाप्ति की ओर है। इस प्रभात के पावन संगम काल में जो आत्माएँ पावनता की गंगा में स्नान करना चाहती हैं, उनके लिए मार्ग खुला है। क्योंकि स्वयं भगवान ने इस समय को वरदान दिया है। जो भी आत्मा पावन होना चाहे, प्रभु की शरण आये और वरदान प्राप्त करे, परन्तु कैसी विडम्बना है कि जो लोग हज़ारों वर्षों से पुकारते रहे कि हे पतित-पावन आओ, हमें पावन बनाओ, उनकी पुकार सुनकर जब पतित-पावन प्रभु उन्हें पावन बनाने के लिए पुकार रहे हैं, तो वे प्रभु की पुकार भी नहीं सुनते।

ये वही शास्त्र-चर्चित देवियां हैं

हम भारतवासी पावन थे, सम्पूर्ण भारत ही पावन था। जिन देवी-देवताओं के मन्दिरों से ही पवित्रता को अपनाना पड़ता है.... जिनके पुजारी-सन्यासी भी पवित्रता को अपनाना चाहते हैं, भला सोचो कि वे स्वयं कितने पावन होंगे।

तो वही देवियां पुनर्जन्म लेते-लेते पुन: यहां पहुँची हैं और वे पुन: वही देव पद पाने के लिए योग-तपस्या कर रही हैं। इसीलिए सहज भाव से ही उन्होंने पवित्रता को अपना लिया। क्योंकि वे तो थीं ही पवित्रता की देवियां। उन्हें यह एहसास हो गया कि हम ही वे थे... और इस अनुभव के बाद पवित्रता को अपनाना कठिन नहीं रह जाता।

हमारे मन कैसे हों?

अब हम ब्रह्मा-वत्सों को पुन: इस धरा पर पवित्रता का सूर्य चमकाना है। पवित्रता के बल के बिना सभी निर्बल हो चुके हैं, संसार मानो शक्तिहीन हो चुका है और प्रकृति के अधीन होता जा रहा है। ऐसी विकट परिस्थिति में, जबकि चारो ओर काम के ज्वालामुखी फट रहे हैं, प्रत्येक मन में तनाव व अशान्ति की अग्नि जल नही है, काम-पीड़ा से दु:खी मनुष्य शीतल छाया की खोज में भटक रहा है, हम ज़िम्मेदार आत्माओं के मन कितने निर्मल, कितने शीतल व कितने शक्तिशाली हों! हमारा प्रत्येक संकल्प सृष्टि के लिए पावनता का वरदान हो, हमारा प्रत्येक संकल्प निर्बलों का सहारा हो... हमारा प्रत्येक संकल्प काम-अग्नि पर शीतल जल के छींटे छिड़कने समान हो... हमारा प्रत्येक संकल्प अनेक आत्माओं पर उपकार करने वाला हो। हमारा मन संसार में पवित्रता के प्रकम्पन भी तभी फैलायेगा, जबकि मन पवित्रता के सागर से जुड़ा होगा। इस प्रकार ईर्ष्या, द्वेष, तृष्णा, व अहं से रहित मन वाले ही धरा पर पावनता की गंगा बहायेंगे।

युवा काल में सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य - एक महान आश्चर्य

सत्य है, परन्तु आश्चर्य भी कि हम में से कई ब्रह्मा-वत्सों ने अपने युवा काल में ही सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य की स्थिति प्राप्त कर ली है। यह कैसे संभव हुआ? ईश्वरीय वरदान से या स्वयं के योग-अभ्यास से? दोनों से ही। यह स्थिति संसार के विचार को सन्तों और मनोवैज्ञानिकों के लिए सुन्दर चुनौती है। हो भी क्यों न... हमने ही तो यह चुनौती भरा पथ स्वीकार किया था। इस स्थिति तक पहुँचने के लिए पुरुषार्थी को श्रेष्ठ संकल्पों की पालना से व्यर्थ के वेग को समाप्त करना होता है, दृढ़ संकल्प करें।

धुरी। शिव जयंति पर शिवध्वज फहराने के बाद संगरूर जिला चेम्बूर के अध्यक्ष पुरुशोत्तम कांसल,नगर परिषद के अध्यक्ष रघुवीरचंद थानेदार, मंजीतसिंह, ब.कु.बृज बहन, ब्र.कु.मूर्ति, ब्र.कु.सुदर्शन तथा अन्य।

शांतिवन-आबू रोड। परमात्म मिलन कार्यक्रम में दादी हृदयमोहिनी से मुलाकात करते हुए तेलगु फिल्म अभिनेता गोपीचन्द व उनकी धर्मपत्नी।

माउण्ट आबू-राज.। जी.एस.बाली,फूड,सिविलि सप्लाइज़ एंड कन्ज़्यूमर अफेयर्स एंड एडिशनल चार्ज फॉर ट्रांसपोर्ट,टेक्निकल एज्युकेशन,वोकेशनल एंड इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग मिनिस्टर को ब्रह्माकुमारी संस्था के इतिहास से परिचित कराते हुए ब्र.कु. प्रकाश।

दिल्ली-लक्ष्मीनगर। त्रिमूर्ति शिवजयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित रैली का शिव ध्वज दिखाकर शुभारंभ करते हुए बौद्ध आश्रम प्रभारी बन्ते भाई एवं सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. पुष्पा। साथ हैं ब्र.कु. हेमा, ब्र.कु. प्रेरणा, ब्र.कु. गुलशन, ब्र.कु. मानवी व अन्य।

सुन्नी-शिमला। महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण करते हुए तहसीलदार डॉ. सन्तराम शर्मा, ब्र.कु. शकुंतला व ब्र.कु. रेवादास। साथ हैं शहर के गणमान्य जन।

दिल्ली-हरीनगर। महाशिवरात्रि महोत्सव पर दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. शुक्ला। साथ हैं बायें से ब्र.कु. सुंदरलाल, न्यायाधीश वी. ईश्वरैय्या, म्युनिसिपल काउंसलर राधिका सेतिया व हेमन्त सेतिया।

रुपन्देही-नेपाल। जिला जेल में 'सकारात्मक परिवर्तन' कार्यक्रम के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. पंचम सिंह, ब्र.कु. बबिता, ब्र.कु. निर्जला तथा बंदीवान भाई।